SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-2 April - June 2026 E-ISSN: 2584-2900

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श

वंदना शुक्ला
शोधार्थी (हिंदी विभाग)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोधसार

आज के पूंजीवादी समाज में भले ही महिलाओं को घर की चार दीवारी से बाहर निकलने का अवसर मिल गया हो, लेकिन जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने में उनकी स्थिति पर अभी भी पुरुष का प्रभुत्व बना हुआ है। स्त्री की पीड़ा उसकी वेदना और दर्द कहीं से भी कम नहीं हुए हैं। स्त्री-विमर्श केवल महिलाओं की समस्याओं का एक कोणीय अध्ययन नहीं है, बल्कि यह विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक आयामों से जुड़ी है। यह विमर्श महिलाओं के अनुभवों को समझने का प्रयास करता है और उन्हें मानवीय संदर्भों में प्रतिष्ठित करता है। सदियों से स्त्री-चेतना ने महिलाओं को उनके अधिकारों, स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा के प्रति जागरूक किया है। यह विमर्श महिलाओं के आत्मगौरव, आत्मसम्मान और आत्मनिर्णय को सशक्त बनाने का माध्यम है। आज भी जहाँ महिलाओं को कुछ हद तक स्वतंत्रता मिली है, वहीं जीवन के निर्णायक मोर्चों पर पुरुषों का प्रभुत्व बना हुआ है।

बीज शब्द

स्त्री विमर्श समाज राजनीतिक तंत्र वैचारिक दृष्टि संवेदना व्यवस्था।

प्रस्तावना

परंपरा से चली आ रही साहित्य और सामाजिक संरचना में स्त्रियों की दैनिक स्थिति को दिखाया गया है स्त्री विमर्श का सीधा संबंध उनकी सोच समझ और विचारों को अभिव्यक्त न करने का अवसर दिया गया हो। सदियों से स्त्रियों की उपेक्षा एवं उनके ऊपर किए गए शोषण, एवं अनेक जुझती हुई समस्याओं के कारण स्त्री विमर्श चर्चा का जन्म हुआ स्त्री विमर्श एक वैचारिक

आंदोलन है जो स्त्रियों के आत्म सम्मान अधिकार आत्म चेतना एवं समानता को जन्म देता है यह आंदोलन स्त्रियों के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक भेद को समाप्त करना चाहता है इस आंदोलन के माध्यम से समाज में स्त्रियों का पुरुषों के सामान बराबर स्थान एवं एकरूपता लाने की मांग करता है कहा जाता है की आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है इसलिए स्त्री विमर्श की आवश्यकता पड़ी यदि गहराई से देखा जाए तो स्त्री देह भी शोषण का एक बहुत बड़ा कारण रहा है आज स्त्री विमर्श शीर्षक सभी मानसिकता एवं संगठनों विचारों के विरुद्ध एक सांस्कृतिक बदलाव है जिसमें चली आ रही स्त्रियों की प्रति बनी मानसिक दासता में बदलाव कर उसे उचित स्थान दिया जाना है।

शोध विस्तार

स्त्री-विमर्श इसी असमानता और पुरुष वर्चस्व की मानसिकता को चुनौती देता है, जिससे स्त्री के साथ हो रहे शोषण, वेदना और दर्द पर व्यापक चर्चा हो सके। "स्त्री विमर्श का सरोकार जीवन और साहित्य में स्त्री-मुक्ति के प्रयासों से है। स्त्री की स्थिति की पड़ताल उसके संघर्ष एवं पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ-साथ बदलते सामाजिक संदर्भों में उसकी भूमिका, तलाशे गए रास्तों के कारण जन्में नए प्रश्नों के टकराने के साथ-साथ आज की स्त्री की मुक्ति का मूल प्रश्न उसके मनुष्य के रूप में अस्वीकारे जाने का प्रश्न ही है।"[1]

स्त्री विमर्श को प्रो० गिरीश रस्तोगी एक जाग्रत आन्दोलन की मुहिम के रूप में स्वीकारते है। उनका कहना है कि "स्त्री विमर्श बहस का उतना विषय नहीं है जितना जागृति का।"[2] स्त्री विमर्श में स्त्री का उद्देश्य केवल महान रचना या आदर्श चरित्र के परिमाण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह उसके विकास और मुक्ति के अवसरों की तलाश की एक निरंतर साहित्यिक प्रक्रिया है। इसमें स्त्री अपने भीतर की शक्ति, आत्मसाक्षात्कार और सशक्तिकरण को उजागर करती है ताकि वह अपने जीवन के हर क्षेत्र में 1999 अधिक स्वतंत्रता और अवसर पा सके। नमिता सिंह का कहना है किः "जब हम स्त्री विमर्श की बात करते है तो उसका अर्थ सामाजिक विकास की प्रक्रिया से जुड़ा होता है। किसी भी समाज के विकास का पता इस बात से चलता है

कि वहाँ नारी की स्थिति कैसी है जिसमें मुख्य पैमाना स्त्री की शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन और उसकी निर्णय क्षमता है। कहना न होगा ये सभी तत्व आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसी के साथ सामाजिक भी एक आवश्यक आयाम है। इन पायदानों पर चढ़ने के बाद 1999 ही स्त्री अपनी देह या अपने अधिकार की बात कर सकती है। इसी के बाद वह स्वनिर्णय की स्थिति में होती है।"[3] "विमर्श का अर्थ है जीवन्त बहस। साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो विचार का विचार और वर्चस्व की प्राप्ति। अंग्रेजी में इसके लिए 'डिस्कोर्स' शब्द का प्रयोग किया जाता है। किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबद्धताओं का समाहार करते हुए उलट-पुटल कर देखना, उसे समग्रता से समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय संदर्भों में निष्कर्ष प्राप्ति की चेष्टा करना है। अर्थात् किसी विषय पर अभी तक जो लेखन या विचार होता आया है उस पर पुनः विचार कर उसकी दशा और दिशा का मूल्यांकन करना है। "स्त्री विमर्श में व्यक्ति को अपनाने की स्वतंत्रता और स्वायत्तता का विचार है। यह विचार है उन लोकतंत्रात्मक मूल्यों की स्थापना का जो समता, समानता, स्वतंत्रता, सौहार्द, वर्गहीन मानवतावाद की प्रतिष्ठा करते है।"[4] और उसी के अनुरूप स्त्री की भी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। उसे ऐसे स्त्री कदापि नहीं स्वीकार है जो एक वर्ग, जाति, नस्ल राष्ट्र में बाँटी जा रही हो क्योंकि छद्म दमन का ही रूप है।"[5]

20वीं शताब्दी में स्त्री-विमर्श को एक प्रमुख चिंतनधारा के रूप में मान्यता मिली। इस विमर्श से संबंधित लेखकों में जॉन स्टुअर्ट मिल का उल्लेख विशेष रूप से किया जाता है, जिन्होंने अपनी पुस्तक "द सब्जेक्शन ऑफ विमेन" के माध्यम से नारी मुक्ति और मताधिकारों की वकालत की। इसी क्रम में यूरोप में भी स्त्री मुक्ति की लड़ाई को प्रोत्साहित करने में सीमोन द बोउवार की प्रसिद्ध पुस्तक "द सेकंड सेक्स" (1949) का महत्वपूर्ण योगदान रहा। द बोउवार का तर्क था कि पुरुष वर्चस्व की सामंती सोच ने धार्मिक और सामाजिक रुढ़ियों को जन्म दिया, जिसके चलते स्त्री को समाज में दूसरे दर्जे का नागरिक बना दिया गया। स्त्री को अपने अधिकारों और हक की लड़ाई में सफल होने के लिए इन रूढ़ियों से मुक्ति प्राप्त करना आवश्यक है। प्रभा खेतान की ' स्त्री उपेक्षिता' के नाम की अनुवादित पुस्तक सन् 1999 ई० में प्रकाशित

हुई। समकालीन दौर में लेखिकाओं ने स्त्री की स्वतंत्रता, अस्मिता और समानता के प्रश्न को प्रभावशाली ढंग से साहित्य में प्रस्तुत किया है। महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियों में परिवार से लेकर राष्ट्र निर्माण तक स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य, सामाजिक समानता और शिक्षा आदि को सर्वोपरि माना है। महादेवी वर्मा कहती हैं कि "स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है, न देवता की मूर्ति बनकर प्राण प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह जान गयी है कि एक का अर्थ अन्य की शोभा बढ़ाना है तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाना है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पुजापे को देखते रहना है, जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बाँट लेंगे।" [6] स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है, जो पारंपरिक विभाजनों-जाति, धर्म, वर्ग, वंश, प्रांत, देश आदि - से ऊपर उठकर नारी की वास्तविक स्थिति को समझने और उसे बदलने का प्रयास करता है। इसमें नारी अपने ऊपर हो रहे अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न और उपेक्षा के खिलाफ आवाज उठाती है। क्षमा शर्मा के अनुसार, "स्त्री विमर्श स्त्री की अस्मिता के साथ ही उसमें चेतना, अन्याय के विरोध, अस्तित्व बोध और अत्याचार के खिलाफ लड़ाकू वृत्ति का परिचय देता है।"[7] वर्तमान में, आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनती नारी आत्मगौरव, अस्तित्व, चेतना और आत्मनिर्भरता के कारण आत्मविश्वासी और सशक्त हो रही है। यह विमर्श नारी चिंतन को भी बल प्रदान करता है, जिससे नारी अपने अधिकारों की लड़ाई में मजबूती से खड़ी हो सके। मैत्रेयी पुष्पा स्त्री विमर्श के विषय में कहती हैं कि "नारीवाद ही स्त्री विमर्श है। नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री विमर्श है।"[8]

भारत में स्त्री विमर्श की झलक पंडित रमाबाई और सावित्रीबाई फुले के आंदोलन और स्त्रियों के अधिकार के लिए किए गए संघर्ष में देखा जा सकता है। पंडिता रमाबाई नारी के अधिकारों के लिए निर्भीक संघर्ष किया, हिंदू धर्म की रूढ़िवादिता पर आघात किया और 19वीं शताब्दी के आठवें दशक में ही स्त्रियों की स्वतंत्रता की बात उठाई। स्वयं का जीवन उन्होंने स्वाधीनता और आत्मनिर्भरता के आदर्श पर आधारित रखा। सावित्रीबाई फूले उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम उठाए। महिलाओं के लिए अलग स्कूल स्थापित कर, उन्हें शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाने का कार्य किया। इन्हीं कारणों से सावित्रीबाई फूले को अक्सर

देश की पहली शिक्षिका के रूप में जाना जाता है। इन दोनों महानायिकाओं ने नारी मुक्ति और शिक्षा की दिशा में जो नींव रखी, वह आज भी समाज में बदलाव के प्रेरक स्तंभ माने जाते हैं।

हिंदी साहित्य में 20वीं शताब्दी के अंत में स्त्री विमर्श ने नई दिशा और पहचान पाई है। इस विमर्श के उदय में कई लेखकों और लेखिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिन्होंने नारी की अस्मिता, स्वतंत्रता, समानता तथा उसके अधिकारों की वकालत की। उदाहरण के तौर पर महादेवी वर्मा की "श्रृंखला की कड़ियाँ" (1942) ने नारी के अस्तित्व और उसकी भावनाओं को उजागर किया। प्रभा खेतान द्वारा अनूदित "उपनिवेश में स्त्री" (2003) ने स्त्री की सामाजिक स्थिति पर रोशनी डाली। क्षमा शर्मा की "स्त्रीत्व विमर्शः समाज व साहित्य" (2002) में स्त्री-विमर्श के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया। नासिरा शर्मा की "औरत के लिए औरत" (2003) तथा मैत्रेयी पुष्पा की "खुली खिडकियाँ" (2003) ने नारी की स्वतंत्रता और स्वायत्तता की बात को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया। सुमन राजे की "हिंदी साहित्य का आधा इतिहास" (2003) ने भी इस विमर्श में अपना योगदान दिया। साथ ही, प्रेमचंद, जैनेंद्र, यशपाल, अज्ञेय, भगवती चरण वर्मा जैसे प्रणेता से लेकर मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, अनामिका और मृदुला गर्ग जैसी रचनाकारों की लेखनी में स्त्री-विमर्श की झलक देखने को मिलती है, जो नारी के अधिकारों, उसकी अस्मिता और सामाजिक स्थान को चुनौती देती है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में यदि स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि प्राचीन समय में स्त्री को देवी का स्थान प्राप्त था नारी का घर में एवं समाज में पूजनीय एवं सम्माननीय स्थान होता था ऋग्वेद काल में स्त्रियों की स्थिति ज्ञानी के रूप में होती थी उन्हें विदुषी के रूप में पूजा जाता था भी दार्शनिक थी उन्हें विद्या अध्ययन करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी ब्रह्मचर्य थीं उनका समाज में उच्च स्थान था ऋग्वेद की पश्चात उत्तर वैदिक काल में भी आश्रम व्यवस्था में भी स्त्री को समान स्थान प्राप्त था वे शिक्षा के साथ-साथ यज्ञ में भी पुरुषों के समान भाग लेती थी शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन पश्चात ज्ञात होता है कि कर्तव्य परायणता में स्त्री एवं पुरुष का समान स्थान हुआ करता था।

पुराणों में स्त्री एवं पुरुष में बराबरी होती थी उस समय स्त्रियां शिक्षा प्राप्त करना अपना अधिकार समझते थी वे आध्यात्मिक और योग साधना को अपनाती थी वास्तव में यदि देखा जाए तो समझ में आता है कि स्त्री वह अनुपम कृति है जो स्वयं में विशिष्ट सर और रंग भरकर पृथ्वी पर जन्म लेती है स्त्री जैसी भावों की संवेदना भावुकता संसार में अन्यत्र कहीं नहीं होगी स्त्री का मानव जीवन के यथार्थ को सही अर्थ में समझने हेतु एवं समस्याओं के समाधान हेतु अध्ययन करना जरूरी है क्योंकि समसामयिक गतिविधियों में स्त्री अपना योगदान दे रही है आज की स्त्री साहित्यिक सामाजिक दृष्टि से जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

स्त्री विमर्श से आशय :- एसटीवी मार्च एक सामाजिक पहलू है जिसमें स्त्री की वैचारिक एवं साहित्यिक आंदोलन दृष्टिकोण को समाहित किया गया है जिसमें स्त्री की अधिकारों अस्मिता सामान्य सत्तक स्थिति को केंद्र में रखकर की गई है यह केवल एक साहित्यिक विषय नहीं है बल्कि इसमें स्त्री ने अपने दृष्टिकोण से जीवन का यथार्थ संघर्ष एवं चुनौतियां को उजागर किया है जिसने स्त्री में जो स्वयं अनुभव किया वहीं उतार कर अभिव्यक्त किया ।

स्त्री विमर्श की व्याख्या :- स्त्री ईश्वर द्वारा सुसज्जित की गई अर्चा है जिसे व्याकरण की दृष्टि से देखें तो शब्द के अंत में 'ई' स्त्रीलिंग बाजी शब्द शक्ति स्त्री प्रकृति एवं बुद्धि है । "यहां स्त्री विमर्श शब्द का अर्थ होता है अभिव्यक्ति के उन तत्वों या पहलुओं की संरचना जो कुल जोड़ से भी परी जाकर कोई खास अर्थ देने की क्षमता रखता हो ।"[9]

निष्कर्ष

आज के बदलते वैश्विक परिवेश में महिलाओं के संबंध में श्लील-अश्लीलता, मर्यादा, नैतिकता और चारित्रिक दृढ़ता के मानदंडों में बदलाव की आवश्यकता स्पष्ट हो गई है। अब यह माना जा रहा है कि यौन सुख को महिलाओं के दमन का आधार नहीं बनाया जा सकता, और महिलाओं ने इन पुराने दमनकारी सिद्धांतों का कड़ा इनकार कर दिया है। अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए जो बंदिशें थीं, उन्हें उन्होंने तोड़ दिया है। आज महिलाएं उन क्षेत्रों में भी सक्रिय रूप से

भाग ले रही हैं, जिन्हें पहले पुरुषों के लिए आरक्षित माना जाता था। यह परिवर्तन वैश्विक परिवेश और समाज के लिए एक स्वागतयोग्य कदम है और स्त्री-विमर्श के एक महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में उभरता है। जीवन और साहित्य दोनों क्षेत्रों में स्त्री-विमर्श ने एक नई उभरती हुई दृष्टि प्रदान की है, जो निस्संदेह विचारोतेजक है। यह आने वाले समय में साहित्य-सृजन और उसके विवेचन-मूल्यांकन को किस सीमा तक और किस रूप में प्रभावित करता है, यह देखना रोचक होगा।

सन्दर्भ सूची

1. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-2013, पृ० 24
2. स्त्री विमर्श: विविध पहलू, संपा० कल्पना वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2011, पृ० 41
3. स्त्री विमर्श का यथार्थ, ममता कालिया, किताब वाले, नई दिल्ली, संस्करण-2015, पृ० 42
4. नई सहस्राब्दी का स्त्री विमर्शः साहित्यिक अवधारणा एवं यथार्थ, संपा० डॉ० वीरेन्द्र सिंह यादव, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2010, पृ० XI (भूमिका से)
5. हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श, डॉ० संजय सिंह, अनुजा श्रीवास्तव, स्नेह प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-2009, पृ० 116
6. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1999, पृ०सं० 69
7. शर्मा, क्षमा, स्त्रीत्व विमर्श समाज व साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
8. पुष्पा, मैत्रेयी, हंस पत्रिका, सं० राजेंद्र यादव, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, अक्टूबर 1996, पृ०सं० 75
9. अभय कुमार दुबे आधुनिकता के आयने में दलित, वाणी प्रकाशन नई दिल्लीध 2014 पृ. संख्या 413